पंचम – अध्याय

पंचम अध्याय

5.1 भूमिका

विद्यार्थियों को शिक्षा प्रदान करने के साथ–साथ यह जानना बहुत आवश्यक है कि उनका विकास शैक्षिक एवं सहशैक्षिक प्रतिक्रियों में कितना हो रहा है इसका अध्ययन करने के लिए विद्यार्थियों का सतत एवं व्यापक मूल्यांकन करना आवश्यक है। सतत एवं व्यापक मूल्यांकन को विद्यार्थियों के विकास को आगे बढ़ाने का एक प्रमुख बिन्दु माना गया है। सतत एवं व्यापक मूल्यांकन की अवधारणा को शिक्षण अधिगम की व्यवस्थाओं में उपकल्पित करते हुए शिक्षण अधिगम की सक्रियाओं को जीवन्त सार्थक गुणवत्ता पूर्ण एवं प्रभावी बनाया गया।

प्रस्तुत अध्ययन द्वारा यह जानने का प्रयास किया गया है कि सतत एवं व्यापक शिक्षा मूल्यांकन का भोपाल जिले के केन्दीय माध्यमिक बोर्ड विद्यालय के विद्यार्थियों की अभिवृति, आत्म अवधारणा, मानसिक तनाव का अध्ययन एवं शिक्षकों के सतत एवं व्यापक मूल्यांकन पर अध्यापक अभिवृति एवं वर्तमान स्थिति का अध्ययन करने का प्रयास किया गया।

5.2 शीर्षक –

भोपाल जिले के केन्दीय माध्यमिक बोर्ड विद्यालयों में चलाये जा रहे सतत एवं व्यापक मूल्यांकन का अध्ययन

5.3 शोध उद्देश्य –

1. इस अध्ययन का उद्देश्य वर्तमान में केन्द्रीय शिक्षा संस्थान के प्राथमिक विद्यालयों में चलाये जा रहे सतत एवं व्यापक मूल्यांकन का अध्ययन करना।
2. सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के प्रति महिला शिक्षक एवं पुरूष शिक्षकों की अभिवृति का तुलनात्मक अध्ययन
3. सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के प्रति छात्र एवं छात्राओं की अभिवृति का तुलनात्मक अध्ययन
4. विद्यार्थियों की आत्म अवधारणा एवं उनकी शैक्षिक उपलब्धियों के मध्य संबंध का अध्ययन
5. विद्यार्थियों के मानसिक तनाव एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य संबंध का अध्ययन

5.4 परिकल्पनाऐं –

1. सतत एवं व्यापक शिक्षा मूल्यांकन के प्रति छात्राआं एवं छात्रों की अभिवृति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
2. सतत एवं व्यापक शिक्षा मूल्यांकन के प्रति पुरूष शिक्षकों एवं महिला शिक्षकों की अभिवृति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
3. विद्यार्थियों की आत्म अवधारणा एवं शैक्षिक उपलब्धियों के मध्य संबंध में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
4. विद्यार्थियों की मानसिक तनाव एवं शैक्षिक उपलब्धियों के मध्य संबंध में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

5.5 शोध के चर

1. आत्म अवधारणा
2. मानसिक तनाव
3. सी.सी.ई. के प्रति विद्यार्थियों की अभिवृति
4. सी.सी.ई. के प्रति शिक्षकों की अभिवृति
5. सी.सी.ई. की वर्तमान स्थिति पर शिक्षकों का ओपिनियन
6. विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि

5.6 प्रतिदर्श –

इस अध्ययन हेतु हमने भोपाल जिले के तीन केन्द्रीय माध्यमिक विद्यालयों का चयन किया जिसमें सतत एवं व्यापक मूल्यांकन लागू था प्रतिदर्श के रूप में प्राथमिक स्तर पर कक्षा छटवी के विद्यार्थियों को चुना गया जिसमें लगभग 150 विद्यार्थियों को लिया गया एवं छात्राऐं एवं छात्र दोनों ही शामिल है तथा सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के प्रति शिक्षक अभिवृति को जानने के लिए लगभग 20 प्राथमिक स्तर के कक्षा शिक्षकों का चयन अपने अध्ययन में किया।

5.7 उपकरण –

1. सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के प्रति विद्यार्थियों की अभिवृति परीक्षण (स्वयं निर्मित)
2. सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के प्रति शिक्षकों की अभिवृति परीक्षण (स्वयं निर्मित)
3. सी.सी.ई. की वर्तमान स्थिति पर शिक्षकों का ओपीनियन

(स्वयं निर्मित)

4. विद्यार्थियों का आत्म अवधारणा

(डॉ. हरमोहन सिंह)

5. विद्यार्थियों के मानसिक तनाव का अध्ययन

(डॉ ऐ कुमार)

6. शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण

(स्कूल रिपोर्ट कार्ड)

5.8 सांख्यिकी –

प्रस्तुत अनुसंधान कार्य में प्रदतों के विश्लेषण के लिए सहसंबंध गुणांक मध्यमान, मानक विचलन टी–परीक्षण का प्रयोग किया गया है।

5.9 परिणाम –

1. सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के प्रति छात्रों एवं छात्राओं की अभिवृति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
2. सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के प्रति महिला एवं पुरूष शिक्षकों की अभिवृति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
3. विद्यार्थियों की आत्म अवधारणा एवं शैक्षिक उपलब्धियों में मध्य न्यूनतम धनात्मक सहसंबंध है।
4. विद्यार्थियों की मानसिक तनाव एवं शैक्षिक उपलब्धि में न्यूनतम धनात्मक सहसंबंध है।

5.10 सुझाव –

– सतत एवं व्यापक मूल्यांकन की उपयोगिता का अध्ययन
– सतत एवं व्यापक मूल्यांकन से शिक्षकों पर कार्य वृद्धि के प्रभाव का अध्ययन
– सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के प्रति पालकों की अभिवृति का अध्ययन
– सतत एवं व्यापक मूल्यांकन से शिक्षक कहां तक सहमत है इस तथ्य का अध्ययन